वार्तालाप-521 , हैदराबाद (आंध्र प्रदेश), दिनांक 20.02.08
Disc.CD No.521, dated 20.02.08 at Hyderabad (Andhra Pradesh)

समयः 01.30-03.27

जिज्ञासुः बाबा, अभी जो अव्यक्त वाणी चलाई है उसमें खास प्वाइंट्स क्या हैं? उसमें क्या खास प्वाइंट्स है**?**

बाबाः प्वाइंट तो वो ही पुराने-पुराने ही आ रहे हैं। लेकिन रिवाईज़ इसीलिए किए जा रहे हैं कि पुराने प्वाईन्ट भी हैं उनको धारण नहीं किया जा रहा है। कितनी बार आया है कोई नवीनता करके दिखाओ। क्वान्टिटी तो बढ़ रही है। लेकिन अभी क्या करके दिखाओ? क्वालिटी बनाओ। क्वालिटी का मतलब क्या हुआ? कि प्रजा तो बहुत बनाई अब क्या करना है। और किसको प्रत्यक्ष करना है?

जिज्ञासुः राजाओं को।

बाबा: हाँ जो राजा क्वालिटी की आत्मायें हैं, अव्वल नम्बर राजायें, द्वइम नम्बर राजायें और थर्ड क्लास राजायें। उनको प्रत्यक्ष करो। अव्वल नंबर तो आठ ही हैं। द्वइम नम्बर 24 की गिनती में हैं। और बाकी 84? थर्ड क्लास राजाओं की है जो दूसरे धर्मों से कनेक्टेड हैं। तो क्वालिटी निकालो। ये काम बेसिक वाले करेंगे या एडवान्स वाले करेंगे? जिनको पहचान होगी वो ही क्वालिटी निकालेंगे। क्वालिटी को निकालेंगे और क्वालिटी को स्वीकार करेंगे और दूसरों से करायेंगे, मानेंगे और मनवायेंगे।

Time: 01.30-03.27
Student: Baba, what are the special points in the avyakta vani that was narrated now? What are special points in it?
Baba: There are the same old points. But they are being revised because even the old points are not being imbibed. It has been mentioned so many times, 'bring some novelty'. Quantity is increasing indeed but what should you show now? Prepare quality. What is meant by quality? You have prepared a lot of subjects, but what should you do now and whom should you reveal?
Student: The kings.
Baba: Yes, the king-quality souls, the number one kings, the number two kings and the third class kings. Reveal them. Only eight are number one (souls). 24 are in the number two category. And the remaining 84? That is of the third class kings who are connected to other religions. So, bring out quality (souls). Will this task be performed by those who follow the basic knowledge or by those who follow the advance knowledge? Only those who have recognize (the quality souls) will bring the quality (souls) out. They will bring forth the quality (souls) and they will (themselves) accept the quality (souls) and will make the others do it; they (themselves) will accept them and make the others accept them.

समयः 03.30-04.20

जिज्ञासुः बाबा, मुरली में कहा है गुरू लोग वही शास्त्रों की बातें सुनायेंगे। यहाँ बाबा तो नित नया ज्ञान सुना रहे हैं। ऐसा वादा किया है। ऐसा वादा किया था ना।

बाबाः हां।

जिज्ञासुः तो आज भी नित नया ज्ञान क्या सुनाया?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः ये नया ज्ञान नहीं है? जो वहाँ अव्यक्त वाणी चलाई गई। वो क्वांटिटी और क्वालिटी का अर्थ क्या समझते हैं? पुराना अर्थ समझते हैं या नया अर्थ समझते हैं?

जिज्ञासुः पुराना अर्थ समझते हैं।

बाबाः वो तो पुरानी बात समझते हैं। आपने क्या समझा नया समझा या पुरानी बातें समझी? क्वान्टिटी और क्वालिटी का क्या अर्थ समझा? नई बात है या पुरानी बात है।

जिज्ञासुः नई बात है।

बाबाः नई बात है।

Time: 03.30-04.20

Student: Baba, it has been said in the Murli that the gurus will narrate the same (old) topics of scriptures. Here Baba is narrating new knowledge everyday. He has promised so. He has been promised so, hasn't he?

Baba: Yes.

Student: So, what was the new knowledge that was narrated today?

Baba: Is this not new knowledge? The Avyakta Vani that was narrated there; what do they interpet '*quantity*' and '*quality*' as? Do they understand it in the sense of its old meaning or the new meaning?

Student: They interpret it in the old way.

Baba: They understand it in the old way. What did you understand? Did you understand it in a new way or in an old way? What did you understand by '*quantity*' and '*quality*'? Is it a new concept or is it the old concept?

Student: It is a new concept.

Baba: It is a new concept.

<u>समयः 04.25-06.51</u>

जिज्ञासुः बाबा, पतित आत्माएं सेवा नहीं कर सकती हैं। उसमें इन्स्पिरेटिंग वाली सोल प्रवेश करके सेवा करती है। तो फिर 76 में जिन्होंने बाप को प्रत्यक्ष किया, उस समय ब्रह्मा बाबा तो राम बाप में था। 76 में जिन्होंने बाप को प्रत्यक्ष किया उस समय राम बाप में ब्रह्मा वाली सोल था, सूक्ष्म शरीर था। बाकी तीन भाई थे। उन तीन भाईयों में कौन कौन ने प्रवेश किया?

बाबाः माना ब्रह्मा की सोल। मम्मा बाबा की सोल 65 में और 68 में शरीर छोड़ने के बाद चुप हो गई।

जिज्ञासुः कोई न कोई में प्रवेश करके सेवा तो करती है।

बाबाः सेवा कर रही है ना। तो वो ही सेवा सन् 76 से प्रत्यक्ष होने लगी। जो और तीन साथी थे, उनमें भी प्रवेश करके उन्हीं का कार्य चलता है। बापदादा ही सेवा करते हैं बच्चे सेवा नहीं करते हैं। वो सिर्फ हिम्मत करते हैं। हिम्मते बच्चे मदद दे बापदादा।

Time: 04.25-06.51

Student: Baba, sinful souls cannot do service. The inspiriting soul enters it and does service. In that case, those who revealed the Father in (19)76; at that time Brahma Baba was in Father Ram. When those who revealed the Father in (19)76…, Brahma's soul was in Father Ram. It had a subtle body. As for the rest, there were three brothers. Who entered those three brothers?

Baba: Does it mean that the soul of Brahma, the souls of Mamma Baba became silent after leaving their body in 65 and 68 respectively?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: They enter someone or the other and do service.
Baba: They are doing service, aren't they? So, that same service was revealed from (19)76. As regards the three companions, it is the same souls which enter them and perform their task. Only Bap Dada do service, the children don't do service. They just show courage. Children display courage and Bapdada helps.

जिज्ञासुः बाबा, भगवान को तो कहते हैं सर्वव्यापी नहीं है। वो तो एकव्यापी है। तो ब्रह्माबाबा तीनों में प्रवेश करके एक साथ कैसे होगा?
बाबा: भगवान के लिए नहीं बोला, बाप के लिए बोला। क्या? भगवान मात-पिता दोनों रूप में आता है। माता भी बनता है....। त्वमेव माता च पिता त्वमेव। लेकिन पिता का रूप भगवान का है और माता का रूप भगवान का रूप नहीं है। और न माता के रूप से सबके साथ संसर्ग, संपर्क, संबंध में आ सकता है, माता का रूप। बाकी पिता का रूप संबंध में भी आ सकता है संपर्क में भी आ सकता है। संसर्ग में भी आ सकता है। भगवान तो सबका है। माता का रूप प्रभावित होने वाला रूप है; और बाप? बाप प्रभावित नहीं होता है।
Student: Baba, it is said about God that He is not omnipresent (*sarvavyapi*). He is present in one (*ekvyaapi*). So, how does Brahma Baba enter all the three simultaneously?
Baba: It has not been said for God. It has been said for the Father. What? God comes in the form of the mother as well as the father. He becomes a mother as well as… *Twamev mata cha pita twamev* (you are my mother as well as my father). But the Father's form is [the form] of God whereas the mother's form is not the form of God. He cannot come in contact, connection and relationship with everyone in the form of a mother. As for the father's form, he can establish a relationship (with everyone), he can establish contact as well as connection. God belongs to everyone. Mother's form is a form which can be influenced and what about the Father? The Father is not influenced.

<u>समयः 07.02-09.55</u>
जिज्ञासुः बाबा, राम फेल हुआ तभी तो त्रेता में आया। ऐसा मुरली में प्वाइंट है ना। उनकी तो हत्या की गई ना तो कैसे कहेंगे वो फेल हुआ? उनका तो हत्या की गई ना।
बाबाः पहले फेल हुआ या बाद में हत्या हुई?
जिज्ञासुः पहले फेल हुआ।
बाबा: बात खतम हो गई।
Time: 07.02-09.55
Student: Baba, Ram failed. Only then did he come in the Silver Age. There is a Murli point like that, isn't there? He was killed, wasn't he? So, how can we say that he failed? He was killed, wasn't he?
Baba: Did he fail first or was he killed later?
Student: First he failed.
Baba: The matter ends there.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः बाबा ऐसे साबित नहीं कर सकते ना कि पहले हत्या हुई या पहले फेल हुआ।
बाबाः अरे! पहले अनिश्चय आवे तब फेल कहा जावे या अनिश्चय आने से पहले ही फेल कहा जावे? कोई भी ईश्वरीय ज्ञान को, ईश्वरीय यज्ञ को कब छोड़ता है? अनिश्चय आता है तो छोड़ता है। और अनिश्चय आता है अज्ञान के कारण। और कारण बता दिया मुरली में- शुरूआत में इतना ज्ञान नहीं था। तो छोड़ के चले गए। एक होती हैं भक्त आत्मायें। और एक होती हैं ज्ञानी आत्मायें। भक्त दिल के आधार पर चलते हैं कि बुद्धि के आधार पर चलते हैं? दिल के आधार पर, भावना के आधार पर चलते हैं। तो उस समय जिनको साक्षात्कार हुए उनकी भावना तो पक्की बैठ गई, डटे रहे। और जो बुद्धिमान बाप के बुद्धिमान बच्चे थे, उनको बुद्धि का भोजन चाहिए और शुरूआत में बुद्धि का भोजन उतना नहीं मिला तो टूट पड़े। अगर पूरा सृष्टि चक्र का क्लेरिफिकेशन जैसा अभी मिल रहा है वैसा उस समय ही मिल गया होता तो वो कदापि अनिश्चय बुद्धि नहीं होते। और अनिश्चय बुद्धि तो सबको बनना ही है- कोई आगे बनते हैं और कोई पीछे बनते हैं। माया किसी को छोड़ती नहीं है। इसीलिए राम वाली आत्मा यज्ञ के आदि में अनिश्चय में आई, बाद में शरीर छोड़ दिया। विरोधाभास कब पैदा होगा? निश्चय बुद्धि रहेंगे तब विरोध होगा या अनिश्चय बुद्धि होंगे तब विरोध करेंगे? जब अनिश्चय पैदा होता है तब ही विरोध किया जाता है। तो पहले फेल हो गए और बाद में शरीर छोड़ दिया; अब कोई भी कारण हो शरीर छोड़ने का।

Student: Baba, we can't prove whether he was first killed or he first failed, can we?
Baba: Arey! Should we consider someone to have failed when he first loses faith or should he be considered to have failed even before he loses faith? When does someone leave the knowledge of God, the yagya of God? He leaves it when he loses faith. And someone loses faith due to ignorance. Moreover, the reason has been mentioned in the Murli: there was not much knowledge in the beginning. So, they left and went away. One kind of souls is devotee souls and another kind of souls is knowledgeable souls. The devotees follow their heart, or do they follow their intellect? They follow their heart, their feelings. So, those who had visions at that time developed firm feelings (of faith). They remained firm. And those who were the intelligent children of the intelligent father; they require food for their intellect and in the beginning they did not get food for the intellect to the required extent. So, they broke away. Had they received the clarification of the entire world cycle that you receive now, they would never have lost faith at all. Nevertheless, everyone has to lose faith without fail. Some lose faith early and some lose faith later. Maya doesn't leave anyone. This is why the soul of Ram lost faith in the beginning of the yagya and later left his body. When will the feeling of opposition arise? Will someone oppose when they have faith or when they lose faith? Someone opposes only when he loses faith. So, he failed first and left his body later on. Well, whatever may be the reason for leaving the body.

<u>समयः 10.15-11.36</u>

जिज्ञासुः बाबा, चांस देकर चांसलर बनो।
बाबाः दूसरों को चांस दो और चांसलर बनो। हां।
जिज्ञासुः ऐसा एक प्वाइंट आया अव्यक्त वाणी में।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः ठीक है।

जिज्ञासुः इसका क्या अर्थ है?

बाबाः इसका अर्थ ये है खुद इन्चार्ज बन गए, खुद टीचर बन गए तो दूसरों को भी चांस दो कि दूसरे भी टीचर बनें। दूसरे भी इन्चार्ज बनें। दूसरे भी बाप की गद्दी के समान बैठने लायक बनें। तो दूसरों को चांस देंगे या हमेशा खुद ही आगे बनें रहेंगे? एक होते हैं दूसरों को चांस देने वाले। दूसरों को आगे बढ़ाते हैं भले खुद पीछे रहें। एक होते हैं दूसरों को चांस ही नहीं लेने देते। आगे बढ़ते हैं तो टांग अड़ा देते हैं। आगे दौड़ते हैं तो अड़ंगा लगा देते। तो चांस देना अच्छा है। जो दूसरों को चांस देते हैं, उनको भगवान चांस देता है। ड्रामा चांस देता है।

Time: 10.15-11.36

Student: Baba, give *chance* and become a *chancellor*.

Baba: Give chance to others and become a chancellor. Yes.

Student: Such a point has been mentioned in an Avyakta Vani.

Baba: It is correct.

Student: What does it mean?

Baba: It means that when you yourself became an *in-charge*[1]; when you yourself became a teacher, give chance to others as well, so that they too may become teachers, become *incharge*. Others should also become worthy of sitting on the Father's throne. So, will you give chance to others or will you youself remain in the forefront always? One kind of souls is those who give chance to others. They may themselves remain in the back but they enable others to move ahead. One kind is those who do not allow others to take chance at all. If someone moves ahead, they create an obstacle. If someone gallops ahead, they create an impediment. So, it is good to give chance (to others). Those who give chance to others, God gives them a chance, drama gives them a chance.

समयः 11.39-12.50

जिज्ञासुः बाबा ज्ञान में ऐसा कौनसा खास प्वाइंट जानना चाहिए?

बाबाः कौनसा प्वाइंट जानना चाहिए। कैसा? ऐसा माना कैसा?

जिज्ञासुः मतलब खास प्वाइंट क्या जानना चाहिए?

बाबाः खास प्वाइंट तो बाप की पहचान है। किसी को कोर्स देते हैं, चाहे बेसिक कोर्स देते हैं या एडवान्स कोर्स देते हैं। तो खास किस बात पर ध्यान दिया जाता है। बाप की पहचान। अगर बाप की पहचान बुद्धि में नहीं बैठी है। बेसिकली नहीं बैठी है बेसिक वालों को और एडवान्स ज्ञान जो लेने आये हैं उनको एडवान्स बाप का परिचय नहीं मिला है, तो उनको रवाना कर देना चाहिए। क्यों? क्योंकि बाप को ही नहीं जाना, बाप को पहचाना नहीं, ये मुख्य प्वाइंट पर ही पीछे हट गए तो आगे उनको कुछ भी समझाने से फायदा नहीं है। तो ये मुख्य प्वाइंट है बाप की पहचान देना।

Time: 11.39-12.50

Student: Baba, what is the special point that we should know in knowledge?

Baba: Which point should we know? What kind? Such point meaning which point?

Student: I mean to say which particular point should we know?

[1] the sister who takes care of a centre.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: The special point is the introduction of the Father. When you give the course to someone; whether you give the basic course or an advance course, which point do you lay stress on? The introduction of the Father. If the recognition of the Father has not sat in the intellect, if it has not sat basically in case of those who follow basic knowledge, and if those who came to obtain the advance knowledge have not recognized the Father in the advanced sense , then they should be sent away. Why? If they did not come to know the Father, if they did not recognize the Father, if they withdrew themselves back on this very point then there is no use in explaining anything further to them. So, the main point is to give the Father's introduction.

समयः 12.55-16.44

जिज्ञासुः भक्तिमार्ग में रावण की पत्नी मंदोदरी, वो रावण उल्टा सीधा काम करते हुए भी श्रीमत का विरूद्ध चलते हुए भी, उसको पता रह करके कुछ भी नहीं किये। खामोश बैठ गई। अभी तो बाबा बोलते हैं राम ही रावण बनता है। फिर बेहद में मंदोदरी कौन बनती है?

बाबाः मंद उदर। उदर माना पेट। कौनसा पेट हद का की बेहद का? बेहद का। माना रावण के मुकाबले मंदोदरी का बुद्धिरूपी पेट मंद था या तेज था? मंद बुद्धि थी। तो कोई मंदबुद्धि भी, जैसे मातायें अक्सर करके बाप को पहचान लेती हैं और पुरूष लोग उतना नहीं पहचान पाते हैं। लेकिन बुद्धि में तीखे होने के कारण पुरूष लोग जो हैं वो माताओं को क्या करते हैं? दबाए लेते हैं। ऐसे ही कुछ यहाँ बात है। क्या? माना कन्यायें मातायें भल पहचान लेती हैं। उनका दिल गवाही देता है कि भगवान आ गया है। लेकिन याद की यात्रा में उतनी तीखी नहीं हो पाती। इसीलिए पावर नहीं आती। पावर नहीं आती है तो मुकबला नहीं कर पाती। फिर भी उनको सहयोग देने के लिए बांधी हुई है। नहीं तो सहयोग रावण को देना बंद कर देना चाहिए।

Time: 12.55-16.44

Student: In the path of bhakti Ravan's wife Mandodari did nothing although Ravan was performing opposite actions and acting against *shrimat*, despite being aware of everything [she did nothing to stop him]. She sat silently. Now Baba says, Ram himself becomes Ravan. Then who becomes Mandodari in an unlimited sense?

Baba: *Mand udar. Udar* means stomach. Which stomach? Is it in a limited sense or in an unlimited sense? It is in an unlimited sense. It means that when compared to Ravan, was Mandodari's stomach-like intellect weak or strong? It was weak. So, someone with a weak intellect too…, for example, generally, mothers recognize the Father and men are unable to recognize [the Father] to that extent. But being sharper in intellect what do men do to the mothers? They suppress them. It is a similar case here. What? It means that although virgins and mothers recognize [God] and their heart says that God has come, they are unable to achieve swiftness in the journey of remembrance. This is why they do not get power. When they do not get power, they are unable to face [the men]. [Therefore,] in spite of [recognizing God] they are bound to help them. If that wasn't the case, they should stop helping Ravan.

जैसे विभीषण ने क्या किया? मंदोदरी के मुकाबले विभीषण को मंद बुद्धि कहें या तीक्ष्ण बुद्धि कहें? क्या कहें? तीक्ष्ण बुद्धि था। परंतु वो पुरूष था और मंदोदरी स्त्री जाति की थी। कलियुग के अंत में जब ये रामायण की कथा चलती है, राम रावण युद्ध का टाईम चलता है, उस समय कन्याएं मातायें कमजोर हो जाती हैं समाज में या पावरफुल बन जाती हैं? कमजोर बन जाती

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

हैं। इंफियरीटी कमप्लेक्स आ जाता है। इसीलिए रावण को समझाते हुए भी रावण का मुकाबला नहीं कर सकी। कुमारका दादी को ही लो। जब तक जीवित रही तब तक क्या किया? अंदर से तो समझ लिया कि वो सच्चाई है। जो शास्त्रों में भी लिखा हुआ है, रावण जानता था कि राम कौन है, भगवान कौन है; लेकिन फिर भी मुकाबला करता रहा। ये लोक लाज जो है वो छोड़ती नहीं है। जैसे गुरूओं के लिए कहा कि आज के गुरू लोग अगर सर्वव्यापी वाली बात को मान लें तो उनके फालोवर्स उनकी धुत्तेड़ीकी कर देंगे। वो गुरू लोग अपना मान मर्तबा नहीं छोड़ना चाहते हैं। तो ये भी एक आधीनता वाली बात है।

For example, what did Vibheeshan do? When compared to Mandodari should Vibheeshan be said to have a weaker intellect or a sharper intellect? What should we say? He had a sharp intellect. But he was a male and Mandodari belonged to the female community. In the end of the Iron Age, when this story of Ramayana is enacted, when it is the time for the war between Ram and Ravan, do virgins and mothers become weak or powerful in the society? They become weak. They develop inferiority complex. This is why despite explaining to Ravan, she cannot confront him. Take for example Kumarka Dadi, as long as she was alive what did she do? She understood from within what truth is. It has been written in the scriptures that Ravan knew who Ram is, who God is, yet he continued to confront Him. This public honour does not leave him. For example, it has been said for the gurus that if today's gurus accept that God is not omnipresent, then their followers will reject them. Those gurus do not wish to leave their respect and position. So, this is also a topic of subordination.

<u>समयः 16.53-18.40</u>

जिज्ञासुः बाबा, मुरली से भी पियु की वाणी पावरफुल थी। तो फिर उसमें क्या खास जानकारी थी, एक-दो प्वाइंट तो बताइये।

बाबाः यज्ञ की आदि में पियु की वाणी में जो ज्ञान था वो गीता का ज्ञान सुनाया जा रहा था। वो भक्तिमार्ग की गीता को अर्थ सहित करके सुनाते थे। और ये जानने की बात है, मानने की बात है कि जिस गीता की और-2 धर्म सम्प्रदायों के अनुसार 100 से भी ऊपर टीकायें हो सकती हैं जब की वो सब धर्म सम्प्रदाय झूठे हैं। तो ईश्वरीय ज्ञान जो सच्चा है। उस सच्चे ज्ञान के अनुसार गीता का इन्टरप्रटेशन नहीं हो सकता क्या? हो सकता है। यज्ञ के आदि में जो ज्ञान सुनाया जा रहा था, सम्पूर्ण स्टेज में नहीं था; लेकिन जितना जो कुछ भी था वो सात्विक स्टेज में था। इसीलिए बोला ब्रह्मा बाबा के द्वारा जो आखरी वाणियाँ चलाई गईं, उनमें ये बाप स्पष्ट कर दी कि गीता को अभी ज्ञानामृत नहीं कहेंगे। क्यों? क्योंकि मंथन ही नहीं हुआ।

Time: 16.53-18.40

Student: Baba, Piu's vani was more powerful than murli. So, what special information did it contain? Please tell us one or two points.

Baba: In the beginning of the yagya, the knowledge narrated in Piu's Vani was the knowledge of the Gita. He used to explain the meaning of the Gita of the path of bhakti. And it is worth knowing, worth accepting that the Gita about which there can be more than 100 commentaries according to different religions and communities although all those religions and communities are false; then can't there be interpretation of the Gita according to true knowledge of God? There can be. The knowledge that was being narrated in the beginning of the yagya was not in a complete *stage*. But whatever knowledge existed was in a pure (satvik) stage. This is why it was

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

said clearly in the last vanis that were narrated through Brahma Baba that the Gita will not be called the nectar of knowledge now. Why? It is because the churning has not taken place at all.

समयः 18.49-20.10

जिज्ञासुः बाबा, शिव के मंदिर में कब्रिस्तान क्यों दिखाते? कब्रिस्तान रहता है ना शिव के मंदिर में।

बाबाः क्या दिखाते?

जिज्ञासुः शिव के मंदिर में।

बाबाः शिव के मंदिर के अंदर कब्रिस्तान दिखाते हैं? ये कहो शिव का मंदिर मोस्टली कब्रिस्तान में बनाया जाता है। शमशान में बनाया जाता है। उल्टा क्यों बोल रहे हो? शमशान जहाँ-2 होते हैं मोस्टली शहर से बाहर होते हैं और जहाँ शहर से बाहरी हिस्सा होता है वहाँ शिव के मंदिर होते हैं। क्या? इसका मतलब क्या हुआ? इसका मतलब ये हुआ कि शिव को मुर्दा घाट पसंद है। किसके बीच में रहना है? बाप के साथ कौन रह सकेंगे अथवा उल्टे अर्थों में कहें बाप किनके साथ रह सकेगा? जो पूरे मुर्दे बने हुए होंगे उनके साथ बाप रहता है सम्पन्न स्टेज में। अगर बाप के साथ रहना है, बाप का साथी बनना है तो क्या बनना है? मुर्दा बनना है। और मुर्दों का स्थान कहाँ होता है? शमशान घाट में। तो शमशान घाट में वो शिव के सम्पूर्ण स्टेज के मंदिर बनाये जाते हैं।

Time: 18.49-20.10

Student: Baba, why is a graveyard shown in the temple of Shiv? There are graveyards in Shiv's temples.

Baba: What is shown?

Student: In the temple of Shiv.

Baba: Is a graveyard shown within the temple of Shiv? Say it this way, Shiv's temple is mostly built in a graveyard. It is built in cremation grounds. Why are you saying the opposite? Wherever cremation grounds exist, they exist mostly outside the cities and Shiv's temples exist in the areas outside the cities. What? What does it mean? It means that Shiv likes cremation grounds. We have to live in whose midst? Who will be able to live with the Father or if we speak it the other way with whom will the Father be able to live? The Father in a complete stage lives with those who would have become a corpse completely. If you wish to live with the Father, if you want to become the Father's companion, what should you become? You should become a corpse. And which place is meant for corpses? Graveyard. So, the temples of the complete stage of Shiv are built in a graveyard.

समयः 20.20-21.35

जिज्ञासुः बाबा, हरेक धर्मपिता ने आकरके ज्ञान सुनाया खाली (सिर्फ)। उसके आधार से धर्मशास्त्र बन गया। ऐसे ही यहाँ भगवद्गीता का आधार तीस साल का ज्ञान सुनाने से बन गया या तीस साल ज्ञान समझने के आधार से बन गया?

बाबाः ज्ञान न सुनाने, न सुनने के आधार से सच्चे धर्म की स्थापना होती है। न समझने और समझाने के आधार पर सच्चे धर्म की स्थापना होती है। जो भी ज्ञान है सुनने-सुनाने, समझने

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

और समझाने के साथ-2 धारण करना और दूसरों को धारण कराना। तब सच्चे ज्ञान की और सच्चे युग की स्थापना होती है। और ये ईश्वरीय ज्ञान तो प्रैक्टिकल है। सिर्फ सुनने-सुनाने और समझने-समझाने की चीज़ नहीं है। न इससे कोई बाप को प्रत्यक्ष कर सकता है। बाप कब प्रत्यक्ष होगा? जब उस ज्ञान के स्वयं धारणास्वरूप बन करके दिखायेंगे तो दूसरों के ऊपर असर भी पड़ेगा।

Time: 20.20-21.35
Student: Baba, every religious father came and just narrated knowledge. Religious scriptures were prepared on the basis of that. Similarly, here, was *Bhagawadgita* prepared on the basis of narration of knowledge for thirty years or on the basis of understanding the knowledge for thirty years?
Baba: The true religion is established neither on the basis of narrating nor on the basis of listening knowledge. The true religion is established neither on the basis of understanding nor on the basis of explaining. Any knowledge should be inculcated and caused to be inculcated by others along with listening, narrating, understanding and explaining. Only then is the true knowledge and true age established. And this knowledge of God is *practical*. It is not something to be just heard and narrated or to be understood and explained. Nor can anyone reveal the Father through this. When will the Father be revealed? When you put that knowledge into practice yourself, then it will have an effect on others.

समयः 22.07-24.00

जिज्ञासुः बाबा, एक भाई का प्रश्न है – उनके घर में वो अकेला ज्ञान में चलता है। उनका युगल ज्ञान में नहीं चलती है। तो फिर वो लोग जो भी विकर्म करते हैं, इनके ऊपर बोझा पड़ता है क्या?

बाबाः कौन विकर्म करते हैं?

जिज्ञासुः उनका युगल ज्ञान में नहीं चलती।

बाबाः नहीं चलती।

जिज्ञासुः वो अकेला ज्ञान में चलता है।

बाबाः ठीक है।

Time: 22.07-24.00
Student: Baba, a brother wants to ask a question: he is the only person following the knowledge in his family. His wife does not follow the path of knowledge. So, if they perform any sin, does it accumulate any burden on him?
Baba: Who performs a sin?
Student: His wife is not following the path of knowledge.
Baba: She does not follow.
Student: He follows the knowledge alone.
Baba: OK.

जिज्ञासुः वो लोग अगर कोई विकर्म करते हैं। तो फिर उनके ऊपर...।

बाबाः अरे! अज्ञानी अज्ञान के कर्म करेगा उसका एक गुना पाप चढ़ेगा और ज्ञानी? ज्ञानी ज्ञान होते हुए भी पाप भी कर सकता है और पुण्य भी कर सकता है। ज्ञानयुक्त कर्म करता है तो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

100 गुना उसको फल मिलेगा। अच्छा। और अगर ज्ञान होते हुए भी अज्ञान युक्त कर्म करता है, माना पाप कर्म करता है तो 100 गुना पाप चढ़ेगा। इसमें दूसरे के किए हुए कर्म का ज्ञानी के ऊपर असर क्यों पड़ना चाहिए। हाँ, तब असर पड़ेगा कि खुद भगवान बाप को पहचान लेवे और घरवालों को संदेश न देवे कम से कम समझाय नहीं सकता तो संदेश तो दे सकता है। उसके पूर्व जन्मों का सुकृत होगा जिसको संदेश दिया जाए तो ज्ञान को उठा लेगा। जो बाबा कहते हैं अगर हमारे कुल का होगा तो थोड़ा भी सुनावेंगे तो झट निकल आवेगा। बाकी अगर संदेश ही नहीं दिया तो पत्नी का क्या दोष?

Student: If they commit any sin, then does he accumulate (any burden)…..

Baba: Arey! If an ignorant person performs actions out of ignorance, he will accumulate one time sin and what about the knowledgeable person? A knowledgeable person can perform sins as well as noble actions despite having knowledge. If he performs actions according to knowledge, he will get 100 times good fruits. And if he performs actions out of ignorance despite having knowledge, i.e. if he performs sins, he will accumulate 100 times sins. Why should a knowledgeable person be influenced by the actions performed by others? Yes, it will have an effect if he recognizes God, the Father and does not give message to them. If he cannot explain to the members of the family, he can at least give the message to them. If the one who is given the message has performed good actions in the past births, he will grasp it. Baba says, 'If someone belongs to our clan, he will come [into knowledge] even if you give him a little knowledge. But if he does not give message at all, then the wife is not guilty.

<u>समयः 25.00-27.20</u>

जिज्ञासुः शूटिंग टाइम पर सारे विश्व कि माता का पार्ट जगदम्बा बजाती है, भारत माता का पार्ट बजानेवाली भी अलग माता है, सिर्फ सूर्यवंशियों की माता का पार्ट बजानेवाली भी एक माता है माने माताओं के कैरक्टर (पार्ट) तीन दिखाया। लेकिन बाप का कैरेक्टर एक ही बजाया। जगतपिता, भारत पिता और सूर्यवंशी पिता। ऐसा कैसे बाबा?

बाबाः आए भारत में भगवान। आए विश्व में भगवान ऐसे कहा जाता है क्या? विदेश में भगवान, ये तो नहीं कहा जाता। हाँ, एक पिता के मातायें हो सकती हैं कई। लेकिन सारी दुनियाँ का बीज तो एक ही होगा। जैसे मुरली में बोला है, कहते हैं भारत में एक स्त्री गई, तो एक जूती गई दूसरी ले लेते हैं, तीसरी ले लेते हैं, चौथी ले लेते हैं। जैसी धरणी वैसी पैदाइश होती है। धरणी अगर अखण्ड है तो पैदाईश भी अखण्ड होगी। धरणी अगर खण्डित है, व्यभिचारिणी है। तो पैदाइश भी व्यभिचारिणी होगी। और दुनियाँ में व्यभिचारियों की संख्या ज्यादा है या अव्यभिचारियों की संख्या ज्यादा है? व्यभिचारियों के सब धर्म है। यहाँ तक की जो देवता धर्म है सूर्यवंशी और चंद्रवंशी, वो भी क्या बन जाते हैं? वो भी संग के रंग में आकर व्यभिचारी बन जाते हैं। तो नाम रख दिया है शास्त्रों में। दोनों प्रकार की माताओं का- एक का दिति और एक का अदिति। दिति से द्वैतवादी पैदा हुए। और अदिति से? अद्वैत देवताएं पैदा हुए। एक बाप दूसरा न कोई।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 25.00-27.20
Student: During the shooting, the part of the mother of the whole world is played by Jagadamba, the one who plays the part of the mother India is a separate mother and the one who plays the part of the mother of only the Suryavanshis is separate; meaning three characters (parts) of mothers have been shown. But only one person is playing the character of the Father the World Father, the Father of India and Father of the Suryavanshis. How is it Baba?
Baba: God comes in India. Is it said that God came in the world? It is not said that God came in the foreign countries. Yes, one father may have many mothers (i.e. wives). But the seed of the entire world will be one only. For example, it has been said in the Murli that people in India: if one wife dies, it is like losing one shoe, they take a second shoe, a third shoe, a fourth shoe. As is the land, so is the produce. If the land is undivided, the progeny will also be undivided. If the land is divided, if the land is adulterous, then the progeny will also be adulterous. And is the number of adulterous people more in the world or is the number of unadulterated people more? All the religions are adulterous. What do even the deity religions, i.e. *Suryavanshis* and *Chandravanshis* also become? They too are coloured by the company and become adulterous. So, the names of both kinds of mothers have been coined in the scriptures. One is Diti and the other is Aditi. Diti gave birth to dualists. And Aditi gave birth to whom? She gave birth to non-dualistic deities. One Father and none else.

समयः 27.23-38.45
जिज्ञासुः बाबा संगठन में बैठ के मुरली सुनते वक्त कोई और मुरली प्वाइंट के ऊपर विचार सागर मंथन चलता है तो मुरली का डिसरिगार्ड होगा क्या?
बाबाः मुरली चल रही है, बाप की वाणी चल रही है तो ध्यान से सुन लो। बाद में भले प्रश्न उत्तर करो। उसमें लेने देन करो, जिसको इन्ट्रेस्ट होगा वो सुनेगा। इन्ट्रेस्ट नहीं होगा तो चला जाएगा।
जिज्ञासु: नहीं संगठन में बैठके सुनते हैं।
बाबा: सुनना है संगठन में, किसकी वाणी सुनना है?
जिज्ञासु: बाप की वाणी सुनना है।
बाबा: तो उसमें इन्टरफियर थोड़े ही करना चाहिए।
जिज्ञासु: नहीं करने की बात नहीं। जब भी संगठन में बैठके सुन रहे हैं टी.वी के द्वारा उसी वक्त अपने मन में कोई मुरली प्वाइंट पर विचार...।
बाबा: नोट कर लो।
Time: 27.23-38.45
Student: Baba, if we think and churn some other murli point when we listen to Murli while sitting in the sangathan, is it considered as a disregard for Murli?
Baba: The murli is being narrated, the Father's vani is being narrated; so, listen to it carefully. You may raise questions later on. Exchange views on it; those who are interested will listen. If he is not interested, he will leave.
Student: No, when we listen while sitting in the sangathan.
Baba: If we have to listen in a sangathan, whose *vani* (versions) do we have to listen?
Student: We have to listen to the Father's *vani*.
Baba: So, we should not interfere in it.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: No, it is not about interfering. When we are listening to it through a TV while sitting in a sangathan, at that time if we are thinking on some point in our mind…
Baba: Note it down.

जिज्ञासु: ...विचार सागर मंथन चलता है।
बाबा: विचार सागर मंथन चलता है तो नोटबुक है, उसमें नोट करके रखो । कोई श्रद्धा विश्वास से टीचर की बात सुनना चाहता है। कोई को उतनी श्रद्धा नहीं है, प्रश्नचित्त हो गया; प्रश्न कर रहा है। तो सबके अंदर तो प्रश्न पैदा नहीं हुआ। दूसरों को क्यों डिस्टर्ब करना?
जिज्ञासु: हां वो बात नहीं है। अपने मन के अंदर विचार सागर मंथन चल रहा है....
बाबा: तो क्लास पूरा होने दो मुरली का और उसके बाद जो भी जिसको प्रश्न करना है, तो वो टीचर से पूछे कि मुरली में ये बात आई है या क्लेरिफिकेशन में ये बात आई है, इसमें बाबा ने ऐसे बोला है, शास्त्रों में ऐसे बोला है और हमारे हिसाब से अर्थ ऐसा निकल रहा है।
जिज्ञासु: नहीं, नहीं। बुद्धि में ऐसा विचार चलता है तो मुरली का डिसरिगार्ड होगा क्या?
बाबा: बीच में क्यों बोलना चाहिए? हम जो क्लास में जाते हैं गीता पाठशाला में, वो किसकी वाणी सुनने जाते हैं?
जिज्ञासु: बाप की वाणी।
बाबा: फिर? बाप हमारा टीचर है हम टीचर की वाणी सुनने जाते हैं तो बीच में क्यों इन्टरफियर करना चाहिए?
Student: We think and churn the ocean of thoughts.
Baba: If you think and churn the ocean of thoughts, note it down in a notebook. Some want to listen to the teacher's versions with faith and veneration; someone does not have that much faith; he is having questions, he is asking questions. But the question did not arise in everybody's mind. Why should we disturb the others?
Student: Yes. It is not about that. Suppose we are thinking and churning the ocean of thoughts in our mind …
Baba: So, let the murli class be over and after that whoever wants to raise whatever question, he can ask the teacher: this topic has been mentioned in the Murli or in the clarification. Baba has said this in it, it has been said this way in the scriptures and according to me it means this.
Student: No. No. If such thoughts go on in the intellect, is it a disregard for the Murli?
Baba: Why should you speak in between? When we go to a gitapathshala to attend class, we go to listen to whose *vani*?
Student: The Father's *vani*.
Baba: Then? The Father is our teacher. We go to listen to the teacher's *vani*. So, why should we interfere in between?

जिज्ञासु: यहाँ अपने इन्टरफियरेन्स की बात नहीं है।
बाबा: बाद में। क्लास पूरा होने दो और बादमें बोलना चाहिए।
जिज्ञासु: बोलने की बात ही नहीं है। बुद्धि में आता है।
बाबा: तो चुप-चाप वापस आ जाओ।
जिज्ञासु: मुरली का डिसरिगार्ड होगा क्या?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा: क्यों नहीं डिसरिगार्ड होगा? वाणी चल रही है, वाणी में कोई इन्टफियरेन्स करके बोलता रहे। एक बार बोलेगा, दो बार बोलेगा, दस बार बोलेगा, वाणी को आगे सुनने ही नहीं देगा तो डिसरिगार्ड नहीं होता है?

जिज्ञासु: वो ही जानना चाह रहा रहा हूँ। एक प्वाइंट सुनकर .....

बाबा: कोई एक प्वाइंट को महीने भर चलाता रहे; प्रश्न के ऊपर प्रश्न उत्तर करता रहे। तो दूसरों को डिसटर्बेन्स नहीं होगा? दूसरे तो इस बात में इन्ट्रेस्टेड नहीं हैं। जैसे वार्तालाप का क्लास होता है। बहुत लोग ऐसे है जो वार्तालाप सुनते ही नहीं। 'बकवास', ऐसे समझके चले जाते हैं।

Student: Here it is not a question of our interference.
Baba: Later on. Let the class be over and speak later on.
Student: It is not about speaking at all. It comes in the intellect.
Baba: So, come back silently.
Student: Will it be a disregard for the Murli?
Baba: Why will it not be a disregard? The *vani* is being narrated; if someone keeps interfering and speaking in between the *vani;* he will speak once, twice, ten times, he will not let anyone listen to the *vani* further at all. So, is it not a disregard?
Student: That is what I want to know. After listening to a point…..
Baba: If someone is stuck up on a point for a month; if he keeps raising questions upon questions, will it not disturb the others? Others are not interested in this topic. For example, when the discussion class takes place, there are many people who do not listen to discussion at all. They leave thinking it to be rubbish.

जिज्ञासु: ऐसे क्यों करना चाहिए जो...।

बाबा: उन्हें जो बाबा ने बात बोली है, उसके ऊपर उनको श्रद्धा है। ब्रह्मम् वाक्यम् जनार्दनम्। उनको ऐसी श्रद्धा है कि भगवान ने जो बोला, भगवान आ करके जो सुनाता है, वो सब सत सुनाता है और सम्पूर्ण सुनाता है और हमें ज़रूरत होगी तो भगवान आगे भी हमको सुनायेगा। भगवान बिना माँगे हमको देता है कि माँगने पर देता है? बिना माँगे देता है। और पहले तो हम कुछ जानते थे क्या?

जिज्ञासु: कुछ नहीं जानते थे।

बाबा: पहले तो हम कुछ भी नहीं जानते थे। जब भगवान बाप ने आकर हमको सच्चाई सुनाई तो हमने सृष्टि के बारे में, आत्मा के बारे में, परमात्मा के बारे में कुछ बातें बेसिक में जान ली। बेसिकली जान ली फिर भी बुद्धु के बुद्धु बने रहे। फिर भी भगवान आ करके टीचर के रूप में टीच करता है। वो खुद ही हमको आ करके बताता है। तो ऐसे ही जब जैसा टाईम होता है भगवान बाप हमको स्वत: ही बताते हैं। इसीलिए उनको तो ये श्रद्धा है कि भगवान हमको खुद ही सब पूर्ति करता है। हमको कुछ अकल जास्ती भिड़ाने की जरूरत नहीं है। सिर्फ इतना ज़रूर है कि भगवान बाप के द्वारा जो वाणियाँ बोली गई, उन वाणियों पर हम निश्चय विश्वासपूर्वक आगे बढ़ते रहें, प्रक्टिकल जीवन में अनुभव लेते रहें।

Student: Why should they do like this….

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: They have faith on whatever Baba has spoken. *Brahmam vaakyam janardanam* (the verses of Brahma are the verses of God.). They have such faith that whatever God has spoken, whatever God speaks when He comes is truth and it is complete and if we need more, God will narrate to us further as well. God gives us without seeking. Or does He give on seeking? He gives without seeking. And earlier did we know anything?
Student: We did not know anything.
Baba: We did not know anything earlier. When God the Father came and narrated the truth to us, we came to know some concepts about the world, about the soul, about the Supreme Soul basically. We came to know basically, yet we remained fools. Still, God comes and teaches us in the form of a teacher. He Himself comes and tells us. So, in this way, when the time comes, God the Father Himself tells us. This is why they have the faith that God gives us everything Himself. There is no need for us to use our intellect much. But it is necessary that we should keep following faithfully the *vanis* that were narrated through God the Father; we should keep experiencing it in the practical life.

लेकिन अब यहां तो एड्वांस पार्टि मे तो एक प्रकार के बीज तो है नही। एक धर्म के बीज है क्या? हं? यहाँ तो भाँति-भाँति के छिलके चढ़े हुए हैं। तो जिनके बुद्धि रूपी बर्तन में अनेक प्रकार के छिलके चढ़े हुए हैं.... कोई का मोटा छिलका और कोई का पतला छिलका। काई का बुद्धिरूपी आवरण ऐसा है, इतना पतला है कि भगवान बाप ने सुनाया और उन्होंने हृदयंगम कर लिया। खुद धारण किया, दूसरों को धारण कराना शुरू कर दिया। कुछ ऐसे हैं कि छिलका उतरता नहीं। तो वो भी ठीक है, गलत नहीं है। जिसको प्रश्न पैदा होता हो वो अपने प्रश्न को क्लियर करे। शास्त्रों में भी ऐसा आया है। एक गुरू बैठकर एक चेले को पढ़ाता है और उसके प्रश्नों का, जिज्ञासाओं का समाधान भी देता है; लेकिन वो एक की बात और यहाँ तो? यहाँ तो क्लास चलता है। एक की बात नहीं है। हाँ कोर्स जब दिया जाता है तो उसके लिए ये नियम बताया है कि एक बैठकर एक को कोर्स दे। उसमें क्लास की बात नहीं है। उसमें डिसरिगार्ड की भी कोई बात नहीं है। वो कोर्स में प्रश्न उत्तर किए जा सकते हैं।
But now here, in the advance party all the seeds are not of the same kind. Are they the seeds of one religion? Here, [souls] are covered by different kinds of peels. So, those whose intellects in the form of utensils are covered by different kinds of peels…. some are covered by a thick peel and some by a thin peel. The intellect of some is covered by such a thin peel that as soon as God the Father narrates, they take it into their heart (absorb it). They inculcate it themselves and start enabling others to inculcate it. Some are such ones that their peel is not removed at all. So, that is also correct, it is not wrong. Those in whose mind doubts arise should get their questions clarified. It has also been mentioned in the scriptures like this. One guru sits and teaches one disciple and he also clarifies his doubts; but there it is about one (disciple); and here? Here it is a class (consisting of many students). It is not about one. Yes, when the course is being given, a rule has been mentioned that one should sit and give course to one. It is not a question of class there. There is no question of disregard there. Questions can be asked and answers can be given during course.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

इसके लिए तो रामायण में एक आख्यान आया है। शायद याद आ गया हो किसीको। नहीं याद आया? याद नहीं आया? आ गया होगा? अच्छा वीरनारायण को याद आ गया होगा। नहीं याद आया? रावण को राम ने बाण मार-2 करके सर काटना शुरू कर दिया और जितने सर काटते थे उतने सर पैदा हो जाते थे। और ज्यादा पैदा होते जाते थे। सब लोग चकृत हो गए। ये क्या? जितना काटते जाते हैं उतने सर पैदा होते जाते हैं। महाकाली के लिए भी ऐसे ही दिखाते हैं। एक रक्तबीज से सैकड़ों असुर पैदा हो जाते थे। तो विभीषण ने ये बात बताई। क्या? ये रहस्य बताया कि इसके नाभीकुंड में अमृत भरा हुआ है। उसमें अगर आपका बाण लग जाए तो ये खलास हो जाएगा। अब रहस्य क्या है? जो विनाश होना है इस रावण सम्प्रदाय की दुनियाँ का वो विनाश राम वाली आत्मा करती है, ज्यादा भयंकर काम करती है या कृष्ण वाली आत्मा करती है?

जिज्ञासु: रामवाली आत्मा।

There is an episode of Ramayana in this regard. Perhaps someone might have recollected. Did you not? Did you not recollect? You might have? OK, Veernarayan must have recollected. Did you not recollect? Ram started shooting arrows at Ravan and started cutting his heads and as many heads he used to cut the same number of heads used to emerge. Even more number of heads used to emerge. Everyone was surprised. What is this? The more we cut, the more heads emerge. It is shown similarly for Mahakali. Numerous demons used to emerge from one *Raktbeej*[2] (name of a demon). So, Vibheeshan said this. What? He mentioned the secret that there is nectar in his (Ravan's) naval (*naabhikund*). If you (Ram) shoot an arrow there, he will die. Well, what is this secret? Does the soul of Ram perform the task of destruction that is to take place, the destruction of the world of Ravan community, which is a more dangerous task or does the soul of Krishna perform this task?

Student: The soul of Ram.

बाबा: रामवाली आत्मा करती है? जो ब्राह्मण परिवार हुआ है बी.के. नालेज में, उसमें सबसे जास्ति सहन किसने किया?

जिज्ञासु: कृष्ण वाली आत्मा ने।

बाबा: कृष्ण वाली आत्मा ने। और सबसे जास्ति सहन कराने के निमित्त कौन बने? बच्चे। बच्चे ढेर के ढेर और सहन करने वाला एक। और जिन्होंने ऐसा पाप कर्म किया उनके ऊपर हजार गुना बोझा चढ़ा। यहाँ तक की ब्रह्मा ने अपना शरीर भी त्याग दिया और बच्चों के ऊपर अंगुली नहीं उठाई। सूक्ष्म शरीर धाराण कर लिया तो भी गुल्जार दादी के द्वारा किसी के ऊपर अंगुली नहीं उठाई। अब ये जो सौ गुना पापों का बोझ चढ़ा है बच्चों के ऊपर बेसिक ब्राह्मणों की दुनियाँ में, इसका हिसाब किताब होगा या नहीं होगा?

जिज्ञासु: होगा।

Baba: Does the soul of Ram perform (the task of destruction)? In the Brahmin family of BK knowledge, who tolerated the most?

Student: The soul of Krishna.

[2] *rakt beej* means blood seed; he was demon who multiplied himself with every drop of blood that fell on the earth.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: The soul of Krishna. And who became instruments in causing [him] to tolerate the most? The children. The children were numerous and the one who tolerated was one. And those who committed this sin accumulated thousand times sins. [They made him tolerate to such an extent] that Brahma left his body too but he did not raise a finger at the children. Even when he took a subtle body, he did not raise a finger at anyone through Gulzar Dadi. Well, will the burden of hundred times sins that the children have accumulated in the world of basic Brahmins be accounted for or not?
Student: It will be.

बाबा: क्या सतयुग में होगा? कहाँ होगा? संगमयुग में ही होना है। तो कृष्ण वाली आत्मा साकार में जब तक जीवित रही सौम्य रूप धारण करके रही। जब सम्पन्न स्टेज पकड़ेगी तो वो धर्मराज का रूप बन जाती है; पापों का नाश करने का स्पेशल कार्य करती है। एक-एक का सौ गुना गिनायेगी। इसीलिए बोला शंकर क्या करता है? कुछ भी नहीं। संघारकरणी कौन गाई हुई हैं? शक्तियाँ गाई हुई हैं। और शक्तियों में मुख्य माँ का पार्ट किसका है?
जिज्ञासु: जगदम्बा।
बाबा: जगदम्बा तो डब्बा है। उसमें भी माँ का पार्ट बजाने वाली असली आत्मा कौन है?
जिज्ञासु: कृष्ण वाली आत्मा।
बाबा: कृष्ण वाली आत्मा। तो संसार का विनाश कराने के मुख्य रूप से निमित्त कौन हुआ?
जिज्ञासु: कृष्ण वाली सोल।
बाबा: कृष्ण वाली आत्मा। राम वाली आत्मा को तो फिर भी राम राज्य स्थापन करना है। वो तो बहुत छोटे रूप में स्थापन होता है। बाकी इतना बड़ा पसारा फैला हुआ है ब्राह्मणों की दुनियाँ में, बेसिक ब्राह्मणों की दुनियाँ में, एडवान्स ब्राह्मणों की दुनियाँ में ये खलास कैसे होगा? किसके द्वारा होगा? कौन आत्मा निमित्त बनती है?
जिज्ञासु: कृष्ण वाली आत्मा।
Baba: Will it happen in the Golden Age? Where will it happen? It is to take place in the Confluence Age itself. So, as long as the soul of Krishna was alive in corporeal form it assumed a gentle form. When it assumes a perfect stage, it takes on the form of Dharmaraj. It performs the special task of destroying sins. It will punish with a hundred times punishment for each sin. This is why it has been said, what does Shankar do? Nothing. Who are famous as destroyers? The shaktis are famous. And among the shaktis, who plays the main part of the mother?
Student: Jagadamba.
Baba: Jagadamba is a box. Even in her, which soul actually plays the part of a mother?
Student: The soul of Krishna.
Baba: The soul of Krishna. So, who became mainly instrumental in bringing about the destruction of the world?
Student: The soul of Krishna.
Baba: The soul of Krishna. The soul of Ram has to establish the kingdom of Ram (Ramrajya) anyway. That is established in a very small form. But how will such a big expanse of the world of Brahmins that has spread in the world of basic Brahmins, in the world of advanced Brahmins end? Through whom will it end? Which soul becomes instrumental?
Student: The soul of Krishna.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 46.15-47.30

जिज्ञासुः अगर ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिव ने पार्ट बजाया उसे शिवबाबा माना है तो वर्सा माँ से नहीं मिलता है बाप से मिलता है। तो फिर उनको वर्सा कैसे मिला?

बाबाः वर्सा देने वाली आत्मा है न कि डब्बा है? वर्सा देने वाला कौन है? कौनसी आत्मा है? सुप्रीम सोल है या जिसमें प्रवेश किया वो है। ज्ञान तो साकार के बिना नहीं आयेगा। बिनु गुरू होए कि ज्ञान। ज्ञान जो है वो सदगुरू दलाल के रूप में चाहिए। तो दलाल के रूप में तो ब्रह्मा को तो मान लिया ना।

जिज्ञासु: ऐसा भी कहा है ना साकार के बगैर निराकार कुछ नहीं है।

बाबा: हाँ हाँ तो साकार अभी नहीं है क्या?

जिज्ञासु: है।

बाबा: फिर?

Time: 46.15-47.30

Student: If Shiv played a part through Brahma Baba, if he was considered as Shivbaba, the inheritance is not received through the mother, but through the Father. So, then how did he get the inheritance?

Baba: Is it the soul that gives inheritance or is it the box (i.e. the body)? Who gives the inheritance? Which soul (gives the inheritance)? Is it the Supreme Soul or the one in whom He entered? Knowledge cannot be given without the *sakar*. The knowledge cannot be received without a guru. In order to receive the knowledge *Sadguru* is needed in the form of a *dalal* (middleman). So, he (Ram's soul) has accepted Brahma in the form of a *dalal*, hasn't he ?

Student: It has also been said that there is no value of the incorporeal without the corporeal one.

Baba: Yes, yes, so, is the corporeal one not present now?

Student: He is.

Baba: Then?

जिज्ञासु: माना राम वाली व्यक्तित्व के बारे में।

बाबा: हाँ राम वाली आत्मा अभी साकार को याद नहीं करती है? साकार में निराकार को याद नहीं करती है क्या? ब्रह्मा के फोटो को याद करती है क्या?

जिज्ञासु: नहीं, नहीं।

बाबा: नहीं, नहीं?

जिज्ञासु: उस समय की बात है।

बाबा: उस समय राम की आत्मा थी मौजूद क्या?

जिज्ञासुः नहीं थी।

बाबाः फिर?

Student: I am talking about the personality of Ram.

Baba: Yes, does the soul of Ram remember the corporeal one now or not? Does he not remember the incorporeal within the corporeal? Does he remember Brahma's photo?

Student: No, no.

Baba: No, no?

Student: It is about that time.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Was the soul of Ram present at that time?
Student: It wasn't.
Baba: Then?

समयः 47.43-48.40

जिज्ञासुः बाबा, हिस्ट्री में लिखा है, नेपोलियन जब पहली बार अफ्रीका पहुंचा तो फिर वहां के लोगों को गुलाम बनाकर सारा सोना लूटकर लेकर गया। तो फिर ये प्वाइंट 76 में जिन्होंने बाप को प्रत्यक्ष किया, उन तीनों में से कोई है क्या?

बाबाः जो कोई भी होगा और जिसने सच्चाई को प्राप्त किया होगा; सच्चाई माना सोना। वो थोड़े समय तक संसार में वाह-वाही ले सकता है। लेकिन सदा काल के लिए विश्वपिता बनकरके प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। क्या? सदाकाल के लिए नहीं प्रत्यक्ष हो सकता। और नेपोलियन जो था, वो इस्लाम धर्म से कनेक्टेड था या क्रिश्चियन धर्म से कनेक्टेड था? क्रिश्चियन धर्म से कनेक्टेड था, तो समझा जा सकता है।

Time: 47.43-48.40
Student: Baba, it has been written in the history that when Napoleon reached Africa for the first time, he made the people of that place his slaves and looted all the gold. So, does this point apply to one of the three (seed souls) who revealed the Father in (19)76?
Baba: Whoever it may be and the one who would have taken (i.e. looted) the truth, truth means gold; He can attain glory for sometime in the world. But he cannot be revealed as the Father of the world forever. What? He cannot be revealed forever. And was Napoleon connected with Islam or with Christianity? He was connected with Christianity. So you can understand.

समयः 50.30-53.24

जिज्ञासुः बाबा, एक मुरली प्वाइंट है। निश्चयबुद्धि वर्से को पाती है, निश्चयबुद्धि है लेकिन ज्ञान उठाती नहीं तो फिर वो दास-दासी के रूप में आयेगा, ऐसा प्वाइंट है।

बाबाः निश्चयबुद्धि हैं। ज्ञान उठाया नहीं। तो जब फाइनल पेपर्स होंगे, तो ज्ञानी डटे रहेंगे या अज्ञानी डटे रहेंगे? भगवान किसको प्यार करता है?

जिज्ञासुः दिल वालों को।

बाबाः नहीं। ज्ञानी तू आत्मायें मुझे विषेश प्रिय हैं। क्योंकि जो फाइनल पेपर होंगे उसमें जो जितना जास्ति ज्ञानी होगा वो उतना ही जास्ति टिका रहेगा। अज्ञानी होंगे, ढसर हो जावेंगे। बाप के ऊपर से निश्चय ही उनका उखड़ जावेगा।

Time: 50.30-53.4
Student: Baba, there is Murli point. [The one with] a faithful intellect gets the inheritance. If someone has faith but does not grasp knowledge, then they will come in the form of servants and maids. There is such a point.
Baba: They have faith. They have not picked up knowledge. So, when the final papers are held , will the knowledgeable ones remain stable or will the ignorant ones remain stable? Whom does God love?
Student: The ones with a heart.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: No. The knowledgeable souls are especially dear to me because in the final paper, the more knowledge someone has the more he will be able to remain stable. If they are ignorant they will fail. They will lose faith on the Father itself.

जिज्ञासु: निश्चयबुद्धि माना एक बाप दूसरा ना कोई ना।

बाबा: बिल्कुल।

जिज्ञासु: फिर ज्ञान उठाने की क्या बात है?

बाबा: अच्छा। बाप की पहचान के लिए ज्ञान उठाने की दरकार ही नहीं है?

जिज्ञासु: उठाया तभी तो निश्चय बना ना।

बाबा: तुम कह रहे हो ज्ञान उठाता नहीं, ज्ञान में इन्ट्रेस्टेड नहीं है।

जिज्ञासु: मुरली का प्वाइन्ट है ।

बाबा: हाँ, हाँ। मुरली का ही प्वाइंट बता रहे कि जो ज्ञान में इन्ट्रेस्टेड नहीं है वो अज्ञानी की लिस्ट में है या ज्ञानी के लिस्ट में है?

जिज्ञासु: अज्ञानी के लिस्ट में।

Student: A faithful intellect means one father and none else, doesn't it?
Baba: Certainly.
Student: Then where is the question of grasping knowledge?
Baba: OK. Is there no need to grasp knowledge to recognize the Father?
Student: He grasped knowledge; only then did he develop faith, didn't he?
Baba: You are telling that he does not grasp knowledge; he is not interested in knowledge.
Student: There is point in the Murli.
Baba: Yes, yes. I am talking about the Murli point itself, are those, who are not interested in knowledge included in the list of ignorant people or in the list of knowledgeable people?
Student: In the list of ignorant people.

बाबा: वो तो अज्ञानी हुआ। उसकी भी परीक्षा होती है। कहाँ तक ज्ञानी है? कहाँ तक निश्चयबुद्धि है? किसी ने सुना दिया बाप आया हुआ है। ज्ञान नहीं सुना। निश्चय कर लिया- हाँ बाप आया हुआ है। फिर जब परीक्षायें हुईं तो ढसर हो गए। ऐसे कलकत्ते में तो कितना क्लियर हो गया है। ढेर के ढेर कलकत्ता मिनीमधुबन में आने-जाने वाले 500 स्टूडेन्ट्स हो गए 2000 में जब मेला हुआ एडवान्स वालों का। और वो 500-700 स्टूडेन्ट्स, जब परीक्षा हुई, रविंद्र भाई को जेल में डाला गया तो सारे ही उखड़ के भाग गए। जो कन्यायें वहाँ सरेन्डर हुईं उनको भी ले लेकर जाने लगे। आना ही बंद कर दिया। ज्ञान की परीक्षा कब होती है? ऐसी कोई परिस्थिति आए, ऐसा कोई वातावरण बने तब ज्ञान की परीक्षा होती है।

Baba: He is certainly ignorant. He will also have to be tested. How far is he knowledgeable? How far has he got a faithful intellect? Someone narrated that the Father has come. He did not listen to the knowledge. He developed faith, 'Yes, the Father has come'. Then, when he faces the tests, he fails. It became so clear in Calcutta. There were numerous people visiting Calcutta Minimadhuban. There were about 500 students in the year 2000 when a fair (gathering) of people following the advance knowledge was organized. And when there came up a test, when Ravindra bhai was sent to jail, all the 500-700 students left (the knowledge) and ran away. People took away the virgins (i.e. daughters) who had surrendered (themselves) there. They

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

stopped coming there. When is (someone's) knowledge tested? Knowledge (of a person) is tested when such a circumstance, some atmosphere like that emerges.

समयः 55.50-57.00

जिज्ञासुः बाबा एक मुरली प्वाइंट है – आगे सभी यहाँ आकरके रहेंगे। जो भी योगयुक्त होंगे वो इन आँखों से विनाश को देखेंगे।

बाबाः जो टेलीविजन देखा जाएगा वो इन्हीं आँखों से देखा जाएगा या अमेरिका में विनाश होगा, वो इन आँखों से देखा जाएगा?

जिज्ञासुः टेलीविजन में।

बाबाः टेलीविजन में अमेरिका में भी विनाश हो रहा होगा, अफ्रीका में विनाश हो रहा होगा, यूरोप में विनाश हो रहा होगा, तो टेलीविजन में तो दिखाई पड़ेगा ना। यहाँ बैठे-बैठे देखते रहेंगे।

जिज्ञासुः पहले सूक्ष्म में देखना।

बाबाः सूक्ष्म स्टेज जिनकी बनी होगी उनको टेलीविजन की दरकार नहीं है। वो तो आत्मायें इस पावर को प्राप्त कर सकेंगी कि अपने शरीर को अलग देखें और आत्मा उनकी अलग। चाहे तो दूसरों के शरीर में प्रवेश भी पार्ट बजाए सकती हैं। दूर देश में रहने वाले ब्राह्मण में भी प्रवेश करके पार्ट बजा सकती है।

Time: 55.50-57.00

Student: Baba, there is a Murli point: In future everyone will come and stay here. Only those who are *yogyukt* will see destruction through these eyes.

Baba: Will you see through these eyes whatever is shown on the television, or will you see through these eyes the destruction that will take place in America?

Student: In television.

Baba: When destruction will be taking place in America, when destruction will be taking place in Africa, when destruction will be taking place in Europe, it will be visible on Television, will it not be? You will sit here and see it.

Student: First we will see it in a subtle form.

Baba: Those who would have achieved a subtle stage will not need television. Those souls will be able to achieve the power that they will see their body separately and soul separately. They can also enter in the body of someone else and play a part. They can also play a part by entering in a Brahmin sitting far away.

समयः 57.04-59.00

जिज्ञासुः बाबा, गांव-गांव में साई मन्दिर हैं ना, भव्य मन्दिर। तो ऐसे ल.ना. के मन्दिर गांव-गांव में कबसे होंगे?

बाबाः साई बाबा जो भक्तिमार्ग में चल रहा है; साई का अर्थ होता है स्वामी। क्या? स्वामी। स्वामी माना मालिक। किसका मालिक? गांव-गांव, शहर-शहर का मालिक नहीं। बड़े ते बड़ा मालिक कौन है?

जिज्ञासुः शिवबाबा।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा: शिवबाबा नहीं। विश्व का मालिक। शिवबाबा विश्व का मालिक नहीं बनता। वो तो बेताज बादशाह बनता है। ऐसा बेताज बादशाह बनता है और बनाता है, जिसको ताज धारण करने की भी दरकार नहीं है। फिर भी सारी दुनियाँ परमधाम जाने से पहले उसको मस्तक झुकाके जाती है। सारी दुनियाँ के लोग चाहे नास्तिक से नास्तिक भी क्यों न हो वो भी उसे अपना मालिक समझते हैं। बाकी लक्ष्मी नारायण, वो तो स्वर्ग के मालिक होंगे। नई दुनियाँ के मालिक होंगे। विश्व पिता एक ही है। उसको कहते हैं जगतपिता, जगतजननी।

Time: 57.04-59.00

Student: Baba, there are magnificient Sai temples in every village. So, similarly, when will be the temples of Lakshmi and Narayan built in every village?

Baba: Sai Baba who is being worshipped in the path of bhakti; Sai means Lord (*swami*). What? Lord. *Swami* means owner. Whose owner? He is not the owner of villages or cities. Who is the biggest owner?

Student: Shivbaba.

Baba: Not Shivbaba. 'The master of the world'. Shivbaba does not become the master of the world. He becomes an uncrowned emperor. He becomes such an uncrowned emperor and makes others such uncrowned emperors that He need not wear a crown at all. Still, the entire world bows its forehead before him before going to the Supreme Abode. The people of the entire world, even if they are the most atheist ones, they accept him as their master, too. As regards Lakshmi and Narayan, they will be the masters of heaven. They will be the masters of the new world. The Father of the world is only one. He is called *Jagatpita, Jagatjanani* (creator of the world).

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info